Vol XI 2022

ISSN : 2250-2653

RESEARCH FRONTS

A Peer Reviewed Journal of Multiple Sciences, Arts & Commerce

Vol XI 2022

RESEARCH FRONTS

ISSN : 2250-2653

Research Fronts Vol. XI , 2022 ISSN 2250-2653
A Peer Reviewed Journal of Multiple Sciences , Arts and Commerce
Registered with
Government Digvijay Autonomous P.G. College Rajnandgaon, Chhattisgarh, India

Copyright – no part of the content(s) of the volume us allowed to be reproduce without the prior permission of the Govt. Digvijay Auto. P.G. College Rajnandgaon (C.G.)

Chief Editor
Dr. K. L. Tandekar, Principal & Patron
Government Digvijay Autonomous P.G. College Rajnandgaon, Chhattisgarh

Editorial Board

Dr. Shailendra Bharal, Prof. Commerce, Vikram University Ujjain
Dr. Vinod Sen, Ass. Prof. Economics, IGNTU, Amarkantak
Dr. Gaour Gopal Banik, Assot. Prof. Accountancy, Commerce college Guahati
Dr. Jitendra Ramteke, Prof. and Head, Department of Physics, S M Mohota College of Science, Nagpur (MS)
Dr. Anima Nanda, Dean, Bio and chemical engineering, Satyabhama, Institute of Science and Technology (Deemed to be university) Chennai 600119
Prof Manoj Kumar Sinha, Department of Geography, Patna university.
Dr. Pramod Kumar Mahish, Department of Biotechnology, Govt. Digvijay College Rajnandgaon, Chhattisgarh, India
Dr. Keshaw Ram Adil, Department of Botany, Govt. Digvijay College Rajnandgaon, Chhattisgarh, India
Prof. (Asst.) Ragini Parate, Asst. Professor of Commerce, Govt. Digvijay College Rajnandgaon, Chhattisgarh, India

Board of Advisors

Prof. M. K. Verma, Vice Chancellor, Chhattisgarh Swami Vivekanand Technical University Durg, India.
Dr. S. K. Jadhav, Professor of Biotech. , Pt. Ravishankar Shukla University Raipur
Dr. P. R. Chandel, Principal Govt. PG College Chhindwada (M.P.)
Prof. Adhikesh Rai, Deal faculty of Commerce, Rani Durgawati University Indore
Dr. Ravindra Bramhe, Professor of Economics, Pt. Ravishankar Shukla University Raipur, Chhattisgarh, India
Dr. R. P. Patel, Professor, Department of Physics, Guru Ghasidas Central University, Bilaspur (C.G.)

Managing Editor
Prof. (Asst.) Raju Khunttey, rajugdcr@gmail.com

Published by
Government Digvijay Autonomous P.G. College Rajnandgaon, Chhattisgarh, India

Contents

S. No.	Title	Author(s)	Pages
1	Prof. Mohd. Firoz Khan: Scholarship and Simplicity is Thy Name	*Mumtaz Khan*	1 - 4
2	Assessment of Welfare Schemes for Educational Development A case study of the SC Population of Birbhum District, West Bengal	*Somnath Majhi and Sudhir Malakar*	5 - 17
3	Diversity of Rotifera in Kapileshwar lake, Ashti, Di-Wardha (M.S.)	*S.S. Nimgare and U.W. Fule*	18 - 24
4	कालिक बाजार केन्द्रों की स्थानिक–कालिक संगठन	*डुमन साहू और कृष्णनन्दन प्रसाद*	25 - 45
5	बी.एड. प्रषिक्षार्थियों के सृजनात्मक षिक्षण अभिवृत्ति पर अध्ययन	*नीतू सिंह, डॉ. निषा श्रीवास्तव*	46 - 51
6	Eco-revolution through Minor forest-based products in the state of Chhattisgarh	*Madhu Yadav and D.P. Kurre*	52 - 67
7	वित्त आयोग की ग्राम पंचायत के विकास में भूमिका	*रागिनीए के. एल. टांडेकर*	68 - 73
8	*छत्तीसगढ़ी कविता में जनजागरण (लक्ष्मण मस्तुरिया के संदर्भ में)*	कैलाश कुमार, शंकरमुनि राय	74 - 82
9	Somatogenic Properties of Soil In Relation To Microwave Remote Sensing	*A. K. Shrivastava & S. K. Patel*	83 - 94
10	कांट, कृ.च.भट्टाचार्य तथा योग	*हरनाम सिंह अलरेजा*	95 - 98

कांट, कृ.च.भट्टाचार्य तथा योग

हरनाम सिंह अलरेजा

दर्शन एवं योग शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय राजनाँदगाँव (छतीसगढ़)

हरनाम सिंह अलरेजा
hsalreja@gmail.com

कृ. च. भट्टाचार्य कांट अज्ञेय दर्शन मनोवैज्ञानिक और बौद्धिक पद्धति

ब्रह्मांड़ अथाह हैं ,ज्ञान अनन्त है किन्तु मानव–बुद्धि की क्षमता भी असीम हैं। कोई भी ऐसा ज्ञान नहीं है जो बुद्धि की कोटियों द्वारा ज्ञात न हो सके। बस शर्त मात्र यह है कि उस ज्ञान तक पहुंचने की सही पद्धति,समुचित प्राकल्पना स्पष्ट हो। एक प्रकार से देखा जाये तो सारे दार्शनिक, विचारकों और दर्शनों ने , अपनी अपनी दार्शनिक पद्धतियों की ही खोज की हैं।

कांट ज्ञान के प्रमाणीकरण के सन्दर्भ में एक पद्धति बतलाते है तथा यह स्थापना करते हैं कि ज्ञान तक हमारी पहुँच की सीमा यही तक है। किन्तु कृ. च. भट्टाचार्य कांट की उक्त ज्ञान – सीमा निर्धारण से संतुष्ट नहीं है, उनका मानना है कि ज्ञान के प्रमाणीकरण या निर्धारण का कोई भी निष्कर्ष अंतिम नहीं हो सकता है। यदि हम कोई सही पद्धति का अविष्कार कर पाए तो कांट की इस अवधारणा से आगे जाकर अज्ञेय को ज्ञेय में परिवर्तित कर सकते है। कृ.च. भट्टाचार्य अपने दर्शन में एक ऐसी पद्धति को बतलाते है जो कांट ज्ञान–मीमांसा से आगे जाकर भारतीय दार्शनिक दृष्टि को प्रकट करती हैं। सवाल उठता है क्या कोई ऐसी पद्धति हो सकती है जो कृष्णचन्द्र भट्टाचार्य की ज्ञान सम्बन्धी सम्भावना को प्रमाणित और प्रकट कर सकें तो इसका जवाब हमें योग–विज्ञान में मिलता है। योग–विज्ञान की बात करे तो वहां इस प्रकार की असँख्य दुर्लभ पद्धतियों का वर्णन प्राप्त होता हैं। यह कहा जा सकता है कि योग एक प्रकार से ' पद्धतियों का दर्शन ' हैं। योग के प्रमुख ग्रन्थ ' विज्ञान भैरव तन्त्र ' में आदि योग प्रवर्तक शिव द्वारा भैरवी को 112 योग–पद्धतियाँ बतलायी गयी है जो कृ. च. भट्टाचार्य की ज्ञेय संभावनाओं को, बोध की परिधि में लाकर, ज्ञान के उच्चतम और नवीन आयाम को प्रकट करती है। प्रस्तुत शोध–प्रपत्र में कांट ,कृ. च. भट्टाचार्य की पद्धति को आधार बनाते हुए, योग पद्धति द्वारा ज्ञान प्राप्त करने की ज्ञेय संभावनाओं की संक्षिप्त विवेचना की गयी हैं।

कांट अज्ञेयवादी हैं, क्योंकि उनके अनुसार बुद्धि की कोटियों तक पहुंचने वाली अनुभव–सामग्री या संवेदनाएं ही ज्ञान का माध्यम होती है चूंकि तत्वमीमांसीय सत्ताएं अनुभवगम्य नहीं हैं तथा उनकी कोई संवेदना, बुद्धि तक नहीं पहुंचती है अतः कांट ने उन्हें ज्ञेय ना कहकर अज्ञेय कहते है। कृ.चं. भट्टाचार्य कांट के इसी निष्कर्ष को अपने दर्शन में, भूमिका बनाकर स्पष्ट करते हैं। उनके अनुसार यदि सत्ता अज्ञेय है तो यहां पर रुक जाना नहीं है वरन उस पद्धति की खोज करनी चाहिए जिससे यह अज्ञेय अधिगम्य में हो सके।''कृष्ण चंद्र भट्टाचार्य अनुभवातीत तत्वों को बुद्धि की व्यापक परिधि में लाते हुए कहते हैं कि वे अज्ञेय होते हुए भी ऐसे तत्व हैं जिनमें हम विश्वास करते हैं। कांट ने विश्वास को, बोध के एक महत्वपूर्ण आयाम के रूप में स्वीकार नहीं किया। एक यथार्थवादी दार्शनिक की भांति उन्होंने इंद्रियानुभविक ज्ञान को ही, बोध के एकमात्र आयाम के रूप में स्वीकार किया। यही कारण है कि जो तथ्य उक्त आयाम के अंतर्गत स्वीकृत ना हो सके उन्हें उन्होंने अज्ञेय ही माना।''1जबकि कृ.चं.भट्टाचार्य के अनुसार कांट ने जिसे अज्ञेय कहा है, एक पद्धति की खोज कर, उन तक पहुंचा जा सकता है और उन्हें संभाव्य रूप से सिद्ध किया जा सकता है।

कृ.चं.भट्टाचार्य ने अपने दर्शन में उस पद्धति को खोज निकाला हैं। उनकी पद्धति का प्रारंभ, मानव स्वरूप में निहित,स्वातंर्त्य प्रवृत्ति को साधन मानकर होता हैं। कृ.चं.भट्टाचार्य की पद्धति को इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है।

मानव के संग्रथित क्रियात्मक स्वरूप में दो प्रकार की अभिवृत्तियों का अवलोकन सहज संभव है। जिसे भाषागत शब्दों में मांग तथा निषेध कहा जाता है। हमारे आंतरिक स्वरूप में मांग अनिवार्यतः मौजूद है, यह मांग सदैव रहती है तथा जब इस मांग की पूर्ति हो जाती है तो इसका अतिक्रमण और निषेध भी हो जाता है और नवीन मांग भी उपस्थित हो जाती है। यह मांग और अतिक्रमण की प्रक्रिया सदैव चलती रहती है। हालांकि मांग और निषेध या अतिक्रमण का, दर्शन में, सशक्त प्रयोग अस्तित्ववाद में, मुख्यतः सार्त्र की विचारधारा में दिखलाई पड़ता है, किंतु यह दोनों प्रवृतियां सहज अनुभवग्राह्य तथा सार्वभौमिक होने के कारण कृ.चं.भट्टाचार्य ने भी अपने दर्शन में इसे मानव की स्वतंत्रता कहा है। उनके अनुसार यही मांग मानव को अज्ञेय की ओर ले जाती है।''हमारे अंदर एक मांग है जो उस सत्य को, जो विषय की चेतना से, अर्थात अर्थ के क्षेत्र से परे है, जानने के लिए प्रेरित करती है। दर्शन का कार्य कृ.चं.भट्टाचार्य के अनुसार इस मांग के स्वरूप की व्याख्या करना है।''2

कृ.चं.भट्टाचार्य मानव के इसी मांग रूपी स्वातंर्त्य में निहित निषेध को आधार बनाते हैं तथा इसे साधन बना कर कांट के ज्ञान के सीमा संबंधी निष्कर्षगत मान्यता का भी अतिक्रमण करते हैं और उसअज्ञेय तक पहुंचने का मार्ग तैयार करते हैं। वें स्वतंत्रता और निषेध से प्रारंभ करते हुए कहते हैं कि '' मैं अपने आप को स्वतंत्र नहीं समझता लेकिन मैं यह समझता हूं कि मैं सफलतापूर्वक स्वतंत्र हो सकता हूं, जिस तरह शरीर अपने प्रत्यक्षीकृत विषय से, जैसे प्रस्तुतीकरण शरीर से, जैसे भाव प्रस्तुतीकरण से और जैसे आत्मनिरीक्षणात्मक प्रक्रिया भाव से मुक्त होती है।''3 अपनी इसी पद्धति के द्वारा कृ.चं.भट्टाचार्य कांट की अज्ञेय स्थापना को, ज्ञेय संभावना के तल पर उतार लाते हैं।

कृ.चं.भट्टाचार्य अपने दर्शन में , पद्धति को समझाते हुए कहते हैं कि निषेध स्वातंर्त्य द्वारा तीन स्तरों का अतिक्रमण किया जा सकता है। जिसमें प्रथम स्तर वस्तुगत अवस्था (वइरमबजपअम बिज) है। इस स्तर पर सर्वप्रथम मानव, अपने से भिन्न जगत, जिसमें वह रहता है, का निषेध करता है। वह जान जाता है कि यह जगत मुझसे अलग है। इसके पश्चात निषेध का द्वितीय स्तर, जिसे मनोगत अवस्था ेनइरमबजपअम बिज) बतलाया गया है, इसमें स्वतंत्र अभिवृत्ति द्वारा, मानव अपने ज्ञाता रूप अर्थात मन, भावना और विचार से, स्व का अलगाव करता है। बाह्य जगत और आंतरिक ज्ञाता रूप के निषेधोपरांत तृतीय स्तर पर पहुंचा जा सकता है जिसे कृ.चं.भट्टाचार्य आत्मगत अवस्था ेचपतपजनंस बिज) कहते हैं। इस स्तर पर पहुंचने के पूर्व सभी प्रकार के बाह्य और आंतरिक संवेदनाओ और ज्ञान से पार्थक्य हो चुका है। अतः जो शेष रहता है कृ.चं.भट्टाचार्य के अनुसार वही पूर्ण स्वातंर्त्य है, विशुद्ध चेतना है , आत्म स्वरूप है। इस प्रकार उपर्युक्त पद्धति से कृ.चं.भट्टाचार्य

कांट की ज्ञान संबंधी अज्ञेय मान्यता की, अनुमित ज्ञेय संभावना को स्पष्ट कर देते हैं। ''भट्टाचार्य ने परमार्थिक सत्ता की अभिव्यक्ति से संबद्ध आयामों को, केवल सैद्धांतिक स्तर पर ही स्वीकार नहीं किया, बल्कि जीवन के अधिगम्य मनोवैज्ञानिक तथ्यों से उन्हें संबद्ध करते हुए, उनके आधार पर उनकी उपस्थिति में विश्वसनीयता उत्पन्न करने की चेष्टा की है ताकि वें हमें नितांत असंभव न प्रतीत हो।''4

कृ.चं.भट्टाचार्य की इस दार्शनिक पद्धति से एक प्रश्न उत्पन्न होता है उन्होंने तृतीय स्तर पर जिस विशुद्ध आत्म या पूर्ण स्वतंत्रता की व्याख्या की है, इसके पूर्व यदि देखा जाए तो द्वितीय स्तर पर उन्होंने व्यक्ति के ज्ञाता रूप का निषेध कर दिया था, क्योंकि व्यक्ति का ज्ञाता–ज्ञेय स्वरूप ही नहीं रहा तो क्या उस स्वतंत्रता रूपी अभिवृत्ति की प्रामाणिकता का अर्थ स्वतः खत्म नहीं हो जाता है? क्योंकि स्वतंत्रता और परतंत्रता की अर्थवानता व्यक्ति के जगत में स्थित ज्ञेय स्वरूप में है। जगत और विचारों से परे स्व या पर का, कोई भिन्न वर्गीकरण या स्वतंत्रता का, क्या वहां कोई अर्थ हो सकता है? वह स्वतंत्रता तो अर्थहीन ही हो जायेगी क्योंकि उसका ज्ञान तो संभव नहीं है? और इससे विशुद्ध आत्म की प्रमाणिकता पर भी प्रश्नचिह्न लग जाएगा जिसे कृ.चं भट्टाचार्य अपने दर्शन में स्थापित करना चाहते हैं। इसी प्रश्न का उत्तर देते हुए कृ.चं.भट्टाचार्य बतलाते हैं कि ''पूर्ण स्वतंत्रता तभी संभव है जब आत्म स्वयं को विषय से पूर्णरूपेण पृथक कर दे। यद्यपि आत्मत्व का ज्ञान विषयता के संदर्भ में ही होता है, लेकिन यह पूर्ण स्वतंत्रता सिद्धांततः संभावना के रूप में ही ग्राह्य है।''5

इस प्रकार देखा जाए तो कृ.चं भट्टाचार्य की दार्शनिक पद्धति की भी, कांट के दर्शन की तरह, एक सीमा रेखा निर्धारित हो जाती है। वें अपने दर्शन में स्वतंत्रता रूपी साधन का प्रयोग कर, मशीन के पुर्जो की तरह बाह्य जगत, शरीर, मन, बुद्धि ,भावना आदि को खंड खंड करते हुए अंत में उस खंडनकर्ता के ज्ञेय स्वरूप का भी निषेध कर देते हैं तथा कहते हैं कि जो कुछ बाकी बचता है वही संभाव्य विशुद्ध आत्म तत्व है, मैटेफिजिकल सत्ता है।

अपनी पद्धति की व्याख्या कर,कृ.चं.भट्टाचार्य , ज्ञान की संभावना को कांट द्वारा निर्धारित सीमा से आगे ले जाते हैं। लेकिन जिस प्रकार उन्होंने ही बतलाया है कि सभी प्रकार का ज्ञान अनुभवगम्य हो सकता है सिर्फ उस तक पहुंचने की एक उचित पद्धति का होना आवश्यक है और इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि क्या कृ.चं.भट्टाचार्य द्वारा स्थापित ज्ञान की ज्ञेय संभावनाओं से भी आगे जाया जा सकता है? दूसरे शब्दों में जब कांट कहते हैं कि मेटाफिजिकल सत्ता अज्ञेय है तो वें इंद्रियजन्य ज्ञान के ज्ञेयता की बात करते हैं, कृ.चं. भट्टाचार्य इससे आगे बढ़कर, ज्ञान को इंद्रियों से परे, मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करते हुए, आत्मगत अवस्था तक ले जाते हैं। तब क्या इस आत्मगत अवस्था से परे के ज्ञान तक भी पहुंचा जा सकता है? इसका उत्तर हमें योग दर्शन में प्राप्त होता है। योग में हमें एक नहीं अनेक ऐसी पद्धतियों का वर्णन प्राप्त होता है जो न केवल कृ.चं.भट्टाचार्य के ज्ञान सीमा का वर्णन करता है वरन उससे कहीं आगे ज्ञान की अनुभूतिपरक व्याख्या भी करता है। दरअसल योग को तो पद्धतियों का दर्शन कहा जाए तो यह असत्य नहीं है। योग का एक प्रमुख ग्रंथ विज्ञान भैरव तंत्र है। जिसमें योग के आदि प्रवर्तक शिव ने ज्ञान संबंधी अनेक दार्शनिक प्रश्नों के उत्तर हेतु भैरवी को, 112 पद्धतियां बतलाई है। विज्ञान भैरव तंत्र की धारणा 23 में एक पद्धति का वर्णन करते हुए शिव भैरवी से कहते हैं –

''सर्व देहगतं द्रव्यम वियद्व्याप्तं मृगेक्षणे।

विभावयेत ततस्तस्य भावना सा स्थराभवेत् ।46।''6

शिव भैरवी से कहते हैं हे मृगेक्षणे बाह्य विषयों से निवृत्तिपरांत, देहगत द्रव्य रूपी विषयों का अतिक्रमण कर, उस विशुद्ध आत्म तत्व को प्राप्त किया जा सकता है। विज्ञान भैरव तंत्र में, भैरवी द्वारा पूछे गए बौद्धिक दार्शनिक प्रश्नों का उत्तर, शिव द्वारा एक प्रविधि या पद्धति में दिया गया है। यें पद्धतियां उत्तर उपलब्ध करने की, इंद्रियजन्य या बुद्धिपरक दृष्टियां नहीं है। वरन इन पद्धतियों से गुजर जाने पर प्राप्त होने वाला

ज्ञान,अनुभूतिपरक है।ये पद्धतियां उस मेटाफिजिकल ज्ञान तक पहुंचने का साधन है जिन तक इंद्रियां और बुद्धि पहुंच नहीं पाते हैं। जिनके प्रामाणिकता के बारे में कृ.चं.भट्टाचार्य अनुमान या संभाव्य सत्ता कहकर रुक जाते हैं। योग इस संभाव्य ज्ञान के उच्चतम और सर्वोच्च स्तरों तक पहुंचने की पद्धतियों को उपलब्ध कराता है। अतः हम कह सकते हैं कि जिस इंद्रियजन्य ज्ञान पर कांट रुक जाते हैं, कृ.चं.भट्टाचार्य अपने दर्शन में, मनोवैज्ञानिक और बौद्धिक पद्धति द्वारा, उस ज्ञान से आगे जाते हैं, लेकिन जहां कृ.चं.भट्टाचार्य की पद्धति में ज्ञान की सीमा है, वहां से आगे योग जाता है। योग उस मेटाफिजिकल सत्ता को, अंतर्ज्ञान द्वारा प्राप्त करने की अनेक पद्धतियों को बतलाता है और कहता है कि यदि अपने अनुकूल सही पद्धति की खोज कर ली जाए तो अज्ञेय तत्वों की ज्ञेयता, अनुभूति तथा प्रमाणिकता निश्चित है। जिस तक प्रत्येक व्यक्ति पहुंच सकता है यह सार्वभौमिक ज्ञान है।

संदर्भ तथा टिप्पणियां

1– सक्सेना, डॉ लक्ष्मी–समकालीन भारतीय दर्शन, पृष्ठ 283, उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ 2002

2 – शर्मा, के एल–दर्शन के रूप (कृष्ण चंद्र भट्टाचार्य की दृष्टि में), पृष्ठ 23,

3 – वही, पृष्ठ 61,

4 – सक्सेना, डॉ लक्ष्मी–समकालीन भारतीय दर्शन, पृष्ठ 269, उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ 2002

5 – शर्मा, के एल–दर्शन के रूप (कृष्ण चंद्र भट्टाचार्य की दृष्टि में), पृष्ठ 64,

6 – विज्ञानभैरव तंत्र, धारणा 23,

*****